කැලණිය විශ්වවිද්‍යාලය - ශ්‍රී ලංකාව

දුරස්ථ සහ අඛණ්ඩ අධ්‍යාපන කේන්ද්‍රය

ශාස්ත්‍රවේදී (සාමාන්‍ය) උපාධි තෘතීය පරීක්ෂණය (බාහිර) - 2011/2012 (නව නිර්දේශය)
2014 අප්‍රේල්/මැයි/ජූනි

මානවශාස්ත්‍ර පීඨය

හින්දී - HIND E 3025

නූතන හින්දී ගද්‍ය (නියමිත හා අනියමිත)

ප්‍රශ්න සංඛ්‍යාව : 06 යි. කාලය : පැය 03 යි.

केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रश्न संख्या 01 तथा 02 अनिवार्य हैं।**

01. निम्नलिखित **<u>किन्हीं दो</u>** गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (20 अंक)

(क) ''महाराज, दहेज की बातचीत ऐसे सत्यवादी पुरुषों से नहीं की जाती। उनसे तो सम्बन्ध हो जाना ही लाख रुपये के बराबर है। मैं इसको अपना अहोभाग्य समझता हूँ। हाँ ! कितनी उदार आत्मा थी। रुपये को तो उन्होंने कुछ समझा ही नहीं, तिनके के बराबर परवाह नहीं की। बुरा रिवाज है, बेहद बुरा ! बस चले तो दहेज लेनेवालों और दहेज देनेवाले दोनों ही को गोली मार दूँ, चाहे फाँसी क्यों न हो जाए !''

(ख) ''वह तो कितना गन्दा बच्चा है ! ऐसे गन्दे बच्चों के साथ खेलने से छी—छी वाले हो जाते हैं। इनके साथ खेलने से जुएँ पड़ जाती हैं। वे कितने गन्दे हैं, काले—काले धत्त ! ...''

(ग) ''... तुम ठीक कहते हो। बिल्कुल ठीक। जेल का सत्यानाश हो, हाकिमों का सत्यानाश हो। लेकिन प्यारे, मैं क्या करूँ? न मुझसे बैठा जाता है, न इन फूलों की दुर्गत देखी जाती है। माफ करो, दवा दो—उफ, जाड़ा लग रहा है!''

(घ) ''ऐसा न कहो, उन्हें भी भारत में जीना—मरना है। हमारी तरह भारत उनकी भी जन्मभूमि हो चुकी है। अब उन्हें काफिले में लादकर अरब नहीं भेजा जा सकता। उन्हें रहना पड़ेगा, और हमें उन्हें रखना होगा। वे हमें अपना समझें और हम उन्हें, यही स्वाभाविक है, यही उचित है।''

02. निम्नलिखित गद्यांश की भावार्थ सहित व्याख्या कीजिए। (20 अंक)

कर्तव्य–पालन और सत्यता में घनिष्ठ संबंध है। जो मनुष्य अपना कर्तव्य–पालन करता है, वह अपने कामों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है। सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है जिससे इस संसार में मनुष्य अपने कार्यों में सफलता पा सकता है, क्योंकि संसार में कोई काम झूठ बोलने से नहीं चल सकता। यदि किसी परिवार के सभी लोग झूठ बोलने लगें तो उस परिवार में काम नहीं हो सकेगा और सब लोग बड़ा दुख भोगेंगे। इसलिए हम लोगों को अपने कार्यों में झूठ का बर्ताव नहीं करना चाहिए।

03. '**निर्मला** एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें एक पीड़ित नारी की कथा कही गयी है।' सोदाहरण इस कथन की पुष्टि कीजिए। (20 अंक)

04. '**प्रायश्चित्त** कहानी में लेखक ने भारतीय हिंदू समाज के ब्राह्मणों पर तीखा व्यंग्य किया है।' सोदाहरण इस कथन की समीक्षा कीजिए। (20 अंक)

05. **रजिया** रेखाचित्र में निरूपित रजिया का चरित्र–चित्रण कीजिए। (20 अंक)

06. पठित किसी एकांकी की आलोचना कीजिए। (20 अंक)

******